



# INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

## जनपद गोण्डा (उ. प्र.) में स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास :- एक अध्ययन

Bipin Kumar Mishra

Research Scholar

Siddharth University Kapilvastu Siddharth Nagar Uttar Pradesh

### सारांश

मनुष्य को प्रकृति का पुत्र कहा जाता है क्योंकि मनुष्य प्रकृति की गोद में ही पला बढ़ा है पर्यावरण का मतलब वायु जल भोजन पेड़ पौधे आदि मनुष्य के जीवन को स्वच्छ और सुखद बनाते हैं पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के मध्य एक संतुलन का होना विशेष जरूरी है यदि मनुष्य प्रकृति के नियम को समझ कर प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग तथा उपभोग इस प्रकार से करता है कि प्राकृतिक संतुलन बना रहे तब ही सृष्टि के द्वारा निर्मित पर्यावरण तथा मानव जाति स्वस्थ रह सकती है भारतीय संस्कृति में इस सत्य को आदिकाल से ही माना जाता चला आया है तथा भारतीय समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलती चली आ रही है मनुष्य का संपूर्ण जीवन काल प्रकृति की गोद में ही है इसलिए मनुष्य को प्रकृति का पुत्र कहा जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है कि

**"क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा पंचतत्व यह अधम शरीरा"**

अर्थात यह काया पृथ्वी, पानी, हवा, आग, आसमान से ही बनी है। यह सभी तत्व मूलभूत तत्व न होकर विधिक तत्वों के समूह है। शरीर के निर्माण में यही कारक मूलभूत है। हमारे शरीर की सारी जैविक क्रियाएं इन्हीं तत्वों से संचालित है। जिस प्रकार से **पृथ्वी में** आठ सबसे प्रचुर तत्वों (ऑक्सीजन (O), सिलिकॉन (Si), एल्युमिनियम (Al), कैल्शियम (Ca), आयरन (Fe), मैग्नीशियम (Mg), सोडियम (Na) और पोटेशियम (K) , **जल में** हाइड्रोजन तथा आक्सीजन, **आग में** ऑक्सीजन, ऊष्मा और ईंधन को अक्सर "अग्नि त्रिकोण" के रूप में जाना जाता है। चौथा तत्व, रासायनिक प्रतिक्रिया जोड़ें, और आपके पास वास्तव में एक अग्नि "टेट्राहेड्रॉन" होगी **आसमान में** शुद्ध और शुष्क वायु में नाइट्रोजन 78 प्रतिशत, ऑक्सीजन 21 प्रतिशत, आर्गन 0.93 प्रतिशत कार्बन डाई ऑक्साइड 0.03 प्रतिशत तथा हाइड्रोजन, हीलियम, ओज़ोन, निऑन, जेनान, आदि अल्प मात्रा में उपस्थित रहती हैं। नम वायुमण्डल में जल वाष्प की मात्रा 5 प्रतिशत तक होती है। **हवा में** विभिन्न गैस, जलवाष्प, धूल कण, उल्का पिंड आदि विभिन्न तत्वों का संकलन है उसी तरह इस प्रकृति की देन जो हम लोगों की शरीर है इसमें भी कई तत्व समाहित है। भारतीय संस्कृति में यह गहरी समझ है कि पृथ्वी ही माँ है, हम पृथ्वी से ही पैदा होते हैं। हमारी शारीरिक माँ केवल एक प्रतिनिधि है क्योंकि वह भी उसी पृथ्वी माँ से ही पैदा हुई है। सच्ची माँ तो वो मिट्टी ही है जिसे हम अपने शरीर के रूप में ले कर घूमते हैं। अभी हमारा जो शरीर है वो पहले भी कीड़े, साँप, गाय, बंदर, मनुष्य जैसे लाखों शरीरों के रूप में आ चुका है। मिट्टी इन सब में एकदम मूल और स्थिर तत्व है। अगर हम ऊर्जा तंत्र और चक्रों की बात करें तो पृथ्वी तत्व मूलाधार से जुड़ा है। इसी आधार पर बाकी तत्व आगे बढ़ते हैं। हिंदू धर्म शास्त्रों की मान्यता है कि आकाश तत्व से मनुष्य के भीतर बुद्धि चेतना और चिंतन आदि का लगातार विकास होता रहता है। इन्हीं तत्वों के द्वारा किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा, बौद्धिक और मानसिक क्षमता, उसका कद, रंग, रूप, आकार, व्यक्तित्व आदि निर्धारित होता है। प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथों के विद्वान ऋषि मुनि हजारों वर्ष तक स्वस्थ एवं जीवित रहते थे। इसलिए यह सर्वव्याप्त है कि मानव जीवन के समस्त आयामों को यही पंचमहाभूत निर्धारित और नियंत्रित करते हैं। जिन लोगों के शरीर में इन्हीं तत्वों का असंतुलन होता है तो वह व्यक्ति अस्वस्थ हो जाता है और यहां तक कि उसकी अकाल मृत्यु भी हो सकती है।

स्वास्थ्य सेवाएँ मानवीय आवश्यकताओं का एक महत्वपूर्ण घटक और बुनियादी पहलू हैं। इसलिए स्वास्थ्य सेवा को हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार घोषित किया गया है। इसका मतलब है कि लोगों के बेहतर स्वास्थ्य की राज्य की जिम्मेदारी है। स्वास्थ्य सेवा समाज की प्राथमिक आवश्यकता है। जिला अस्पताल में स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए 136 डॉक्टर और 1372 बिस्तर हैं। इसके अलावा यहाँ नेत्र चिकित्सालय, रक्त बैंक, टीबी क्लिनिक, दंत चिकित्सा क्लिनिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशालाएँ हैं। जनपद की स्वास्थ्य सेवाओं का समर्थन करने के लिए टीकाकरण के विस्तारित कार्यक्रम और मुख्य अस्पतालों में एक्स-रे भी उपलब्ध हैं।

**सांकेतिक शब्द:** स्वास्थ्य देखभाल, अस्पताल, चिकित्सा, क्लिनिक।

**उद्देश्य:** वर्तमान अध्ययन क्षेत्र मुख्य उद्देश्य हैं:

- अध्ययन क्षेत्र में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के विशेष वितरण का विश्लेषण करना।
- स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की समृद्धि (अर्थात् डॉक्टरों और बिस्तरों की संख्या) और मानव स्वास्थ्य के साथ उसके संबंध का अध्ययन करना।

## कार्यप्रणाली:

वर्तमान अध्ययन द्वितीयक डेटा स्रोत पर आधारित है। उपलब्धता, संतुलन एवं स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंचाने के लिए विभिन्न प्रतिदर्श के बीच उपयुक्त झुकाव और निर्धारित अनुपात प्राप्त करने के लिए डेटा एकत्र और उपयोग किया गया है। कुछ प्रतिदर्शों का वितरण और वृद्धि सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके निर्धारित की जाती है

## प्रस्तावना

स्वास्थ्य देखभाल मानवीय आवश्यकताओं का एक महत्वपूर्ण घटक और बुनियादी पहलू है। इस प्रकार, स्वास्थ्य देखभाल को एक स्वास्थ्य सेवा घोषित किया गया है। इसका तात्पर्य है कि राज्य की जिम्मेदारी लोगों के बेहतर स्वास्थ्य की है। स्वास्थ्य सेवा समाज की प्राथमिक आवश्यकता है। स्वास्थ्य सेवा को एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके द्वारा एक व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहता है। इसमें स्वास्थ्य शिक्षा और सूचना से लेकर बीमारी की रोकथाम तक स्वास्थ्य सेवाओं का एक व्यापक दायरा शामिल है। प्रारंभिक निदान, उपचार और पुनर्वास और इसमें संगठन वितरण विनियमन गुणवत्ता नियंत्रण भी शामिल है।

इंसान का स्वास्थ्य हमेशा से ही प्रभावित रहा है मानव की चेतना बढ़ने से सर्वप्रथम मानव पर घटित जलवायु बीमारियों की खोज करना एवं उसका निवारण करना शामिल है मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर कुछ न कुछ नई चीजों की खोज करता रहता है जैसे-जैसे मानव के ऊपर पर्यावरण एवं कुपोषण का प्रभाव पड़ता रहता है वैसे-वैसे मानव उसका निवारण भी ढूंढना शुरू कर देता है जलवायु और मौसम में परिवर्तन तथा खान-पान में परिवर्तन जो हमें स्वच्छ हवा भोजन पानी आश्रय और सुरक्षा प्रदान करता है उसे वह पर्यावरण प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन अन्य प्राकृतिक एवं मानव निर्मित स्वास्थ्य तनाव के साथ-साथ मानव कल्याण को कई तरह से खतरा पैदा कर रहा है जलवायु परिवर्तन का प्रभाव दिन प्रतिदिन अगली सदी में बढ़ाने का अनुमान है कुछ वर्तमान में स्वास्थ्य खतरे तीव्र होते जा रहे हैं कुछ नए खतरे उत्पन्न हो रहे हैं

मौसम किसी भी समय और स्थान पर वायुमंडल की स्थिति है। मौसम के पैटर्न साल-दर-साल और क्षेत्र-दर-क्षेत्र बहुत भिन्न होते हैं। मौसम के पहलुओं में तापमान, वर्षा, बादल और हवा शामिल हैं जो लोग पूरे दिन अनुभव करते हैं। गंभीर मौसम की स्थिति में तूफान, बवंडर, बर्फानी तूफान और सूखा शामिल हैं। जलवायु औसत मौसम की स्थिति है जो कई दशकों या उससे अधिक समय तक बनी रहती है। जबकि मौसम मिनटों या घंटों में बदल सकता है, जलवायु में बदलाव की पहचान करने के लिए दशकों से लेकर सदियों या उससे अधिक समय तक की अवधि में अवलोकन की आवश्यकता होती है। जलवायु परिवर्तन में तापमान में वृद्धि और कमी दोनों के साथ-साथ वर्षा में बदलाव, कुछ प्रकार की गंभीर मौसम की घटनाओं के बदलते जोखिम और जलवायु प्रणाली की अन्य विशेषताओं में परिवर्तन शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग, जैव विविधता की हानि और पर्यावरणीय स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों जैसी वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियाँ तेजी से पहचानी जा रही हैं। आधुनिक समय में, जबकि मानव समाज ने बेहतर चिकित्सा देखभाल, उन्नत तकनीक और समृद्ध सामग्री आपूर्ति हासिल की है स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएँ स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं से संबंधित हैं। यह प्रबंधन क्षेत्र का गठन करता है और इसमें संगठनात्मक मामलों से संबंधित कार्य शामिल हैं। भारत स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का प्रतिनिधित्व निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्र या एजेंसियों द्वारा किया जाता है जो लागू स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी और धन संचालन के स्रोत (पार्क) द्वारा एक दूसरे से भिन्न होते हैं

सिंह (2002) के अनुसार, किसी देश में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं और उनके उपयोग की समस्या बहुत जटिल है और उनका समाधान किसी क्षेत्र में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के स्थानिक वितरण के उचित आकलन पर निर्भर करता है। सामान्य रूप से सामाजिक अवसंरचना और विशेष रूप से स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं का विकास किसी विशेष क्षेत्र में लोगों के जीवन की गुणवत्ता को दर्शाता है। सुख-सुविधाओं और सुविधाओं की उपलब्धता को सामाजिक-आर्थिक विकास का एक अच्छा संकेतक माना जा सकता है, जब तक कि आबादी के आकार और वस्तुओं की श्रेणी के आधार पर बस्तियों के संदर्भ में उनका उचित वितरण, पहुंच और आवंटन न किया जाए। इसके अलावा, इन सुविधाओं का लाभ उठाने की लागत को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

यहां स्वास्थ्य और चिकित्सा देखभाल को हमारे रोगियों, रोगियों और घरेलू स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए पेशेवरों, तकनीकी और सहायक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की एक श्रृंखला के प्रावधान के रूप में देखा जाता है।

### पारंपरिक चिकित्सा पद्धति की अवधारणा इस प्रकार है:

**औपचारिक प्रणाली** जैसे आयुर्वेद, यूनानी-तिब्बिया और चीनी प्रणाली।

**अनौपचारिक प्रणाली:-** वैद्य और लोक उपचार द्वारा

**झाड़ फूंक:-** मंत्रोच्चार एवं तांत्रिक प्रयोग द्वारा

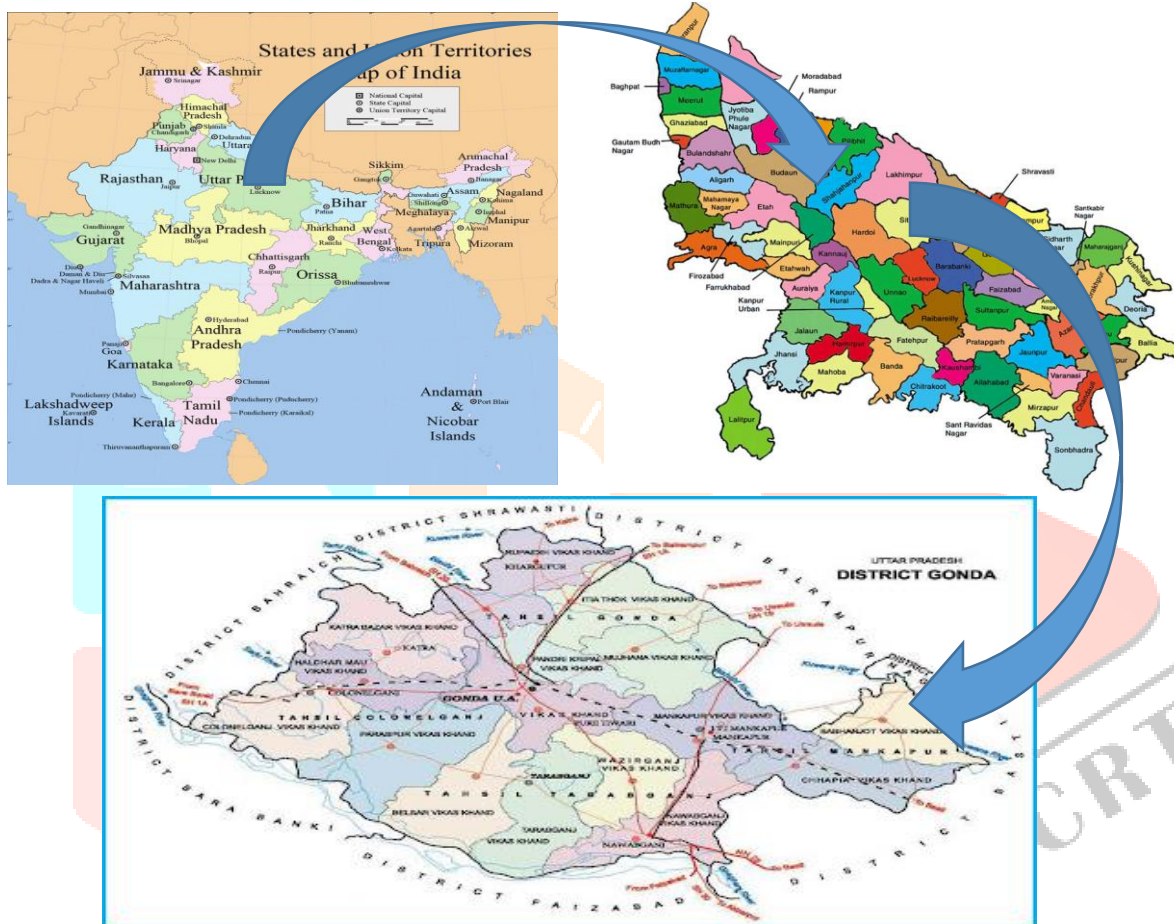
### स्थिति एवं विस्तार

गोण्डा जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वांचल में घाघरा नदी के उत्तर देवीपाटन मण्डल गोण्डा में स्थित है। जनपद के पूरब की सीमा पर जनपद बस्ती, पश्चिम में जनपद बहराईच उत्तर में जनपद बलरामपुर तथा दक्षिण में फैजाबाद व बाराबंकी जनपद स्थित है। विश्व के मानचित्र में जनपद गोण्डा 26.41 से 27.51 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 81.30 से 82.06 पूर्वी देशान्तर के मध्य में अवस्थित है।

जनपद का कुल क्षेत्रफल 4003 वर्ग कि०मी० है जो देवीपाटन मण्डल के कुल क्षेत्रफल का 28.13 प्रतिशत है। इस जनपद में 04 तहसीलें गोण्डा, मनकापुर, करनैलगंज एवं तरबगंज है। इन तहसीलों में तहसील गोण्डा का क्षेत्रफल 1249.48 वर्ग कि०मी०, तहसील मनकापुर का 763.70 वर्ग कि०मी०, तरबगंज का 963.31 वर्ग कि०मी० व करनैलगंज का 1026.51 वर्ग कि०मी० है। इस प्रकार जनपद गोण्डा के कुल क्षेत्रफल का 31.21 प्रतिशत तहसील गोण्डा, 19.07 प्रतिशत तहसील मनकापुर, 24.06 प्रतिशत तहसील तरबगंज व 25.64 प्रतिशत तहसील करनैलगंज का क्षेत्रफल है।

2011 में गोण्डा की जनसंख्या 3,433,919 थी, जिसमें पुरुष और महिला क्रमशः 1,787,146 और 1,646,773 थे। 2001 की जनगणना में, गोण्डा की जनसंख्या 2,765,586 थी, जिसमें पुरुष 1,451,101 और शेष 1,314,485 महिलाएँ थीं। गोण्डा जनपद की जनसंख्या महाराष्ट्र की कुल जनसंख्या का 1.72 प्रतिशत है। 2001 की जनगणना में, गोण्डा जनपद के लिए यह आँकड़ा महाराष्ट्र की जनसंख्या का 1.66 प्रतिशत था। 2001 की तुलना में जनसंख्या में 24.17 प्रतिशत का परिवर्तन हुआ। भारत की पिछली जनगणना 2001 में, गोण्डा जनपद की जनसंख्या में 1991 की तुलना में 25.45 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई थी। 2011 में गोण्डा की औसत साक्षरता दर 58.71 थी, जबकि 2001 में यह 58.71 थी। अगर लिंग के आधार पर देखा जाए तो पुरुष और महिला साक्षरता दर क्रमशः 69.41 और 47.09 थी। 2001 की जनगणना के लिए, गोण्डा जनपद में यही आंकड़े 56.39 और 27.17 थे। गोण्डा जनपद में कुल साक्षर 1,679,994 थे, जिनमें पुरुष और महिला क्रमशः 1,034,181 और 645,813 थे। 2001 में, गोण्डा जनपद में 949,342 साक्षर थे। लिंग अनुपात के मामले में गोण्डा में यह 2001 की जनगणना के 906 के मुकाबले 1000 लड़कों पर 921 था। जनगणना 2011 निदेशालय की नवीनतम रिपोर्टों के अनुसार भारत में औसत राष्ट्रीय लिंग अनुपात 940 है। 2011 की जनगणना में, बाल लिंग अनुपात 1000 लड़कों पर 926 लड़कियाँ हैं, जबकि 2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार यह 1000 लड़कों पर 952 लड़कियाँ थी।

जनगणना में गोण्डा समेत सभी जिलों के 0-6 वर्ष से कम आयु के बच्चों के बारे में भी आंकड़े एकत्र किए गए। 0-6 वर्ष से कम आयु के बच्चों की कुल संख्या 572,386 थी, जबकि 2001 की जनगणना में यह संख्या 536,566 थी। कुल 572,386 में से 297,178 लड़के और 275,208 लड़कियाँ थीं। 2011 की जनगणना के अनुसार बाल लिंग अनुपात 926 था, जबकि 2001 की जनगणना में यह 952 था। 2011 में गोण्डा जनपद में 0-6 वर्ष से कम आयु के बच्चों की संख्या 16.67 प्रतिशत थी, जबकि 2001 में यह 19.40 प्रतिशत थी। भारत की पिछली जनगणना की तुलना में इसमें -2.73 प्रतिशत का शुद्ध परिवर्तन हुआ।



### जनपद गोण्डा में स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं:-

जहां तक सरकारी सुविधाओं का सवाल है गोण्डा जनपद में चिकित्सा सुविधाएं फिलहाल उतनी बेहतर नहीं हैं। चिकित्सा सेवाएँ मुख्य रूप से जनपद के सरकारी अस्पताल और निजी अस्पताल द्वारा प्रदान की जाती हैं। इसके अलावा, अध्ययन क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए स्वैच्छिक संगठन भी बहुत कम हैं। शहर के जनपद अस्पतालों में सुधार सेवाओं की कमियों को दूर करके उन्हें और विकसित किया जा रहा है



**तालिका संख्या:- 01**

जनपद गोण्डा उत्तर प्रदेश में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएं

क्रम संख्या	मद	2018-19	2019-20	2020-21
1	राजकीय सार्वजनिक	70	70	70
2	राजकीय विशेष	1	1	1
2.1	क्षय	1	1	1
2.2	कुष्ठ	0	0	0
3	संक्रामक रोग	0	0	0
4	स्थानांतरिक निकाय	1	1	1
5	सहायता प्राप्त निजी	64	62	87
6	आर्थिक सहायता प्राप्त योग	116	134	159

आंकड़ों का स्रोत:- जिला सांख्यिकी पत्रिका गोण्डा

स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता और गुणवत्ता किसी भी देश की सामाजिक प्रगति का मुख्य आधार होती है। प्रस्तुत आंकड़ों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि भारत में वर्ष 2018-19 से लेकर 2020-21 तक सरकारी और निजी क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं में कुछ स्थिरता के साथ-साथ कुछ क्षेत्रों में वृद्धि भी देखने को मिली है। स्थानांतरिक निकायों द्वारा संचालित अस्पतालों की संख्या भी तीनों वर्षों में 1 रही। वहीं, सहायता प्राप्त निजी अस्पतालों में थोड़ी बहुत उतार-चढ़ाव के साथ बढ़ोतरी देखी गई। 2018-19 में इनकी संख्या 64 थी, जो 2019-20 में घटकर 62 हो गई, लेकिन 2020-21 में यह बढ़कर 87 हो गई। यह बढ़ोतरी निजी क्षेत्र की भागीदारी में वृद्धि को दर्शाती है। सबसे अधिक उल्लेखनीय वृद्धि आर्थिक सहायता प्राप्त योग केंद्रों में हुई है। इनकी संख्या 2018-19 में 116 थी, जो 2019-20 में 134 और 2020-21 में बढ़कर 159 हो गई। यह दर्शाता है कि सरकार ने आयुष (AYUSH) प्रणाली और योग पर विशेष ध्यान दिया है और इन्हें संस्थागत रूप में आगे बढ़ाया है। सरकारी अस्पतालों की संख्या है: 75 एलोपैथिक, 42 आयुर्वेद, 04 यूनानी, 13 होम्योपैथिक

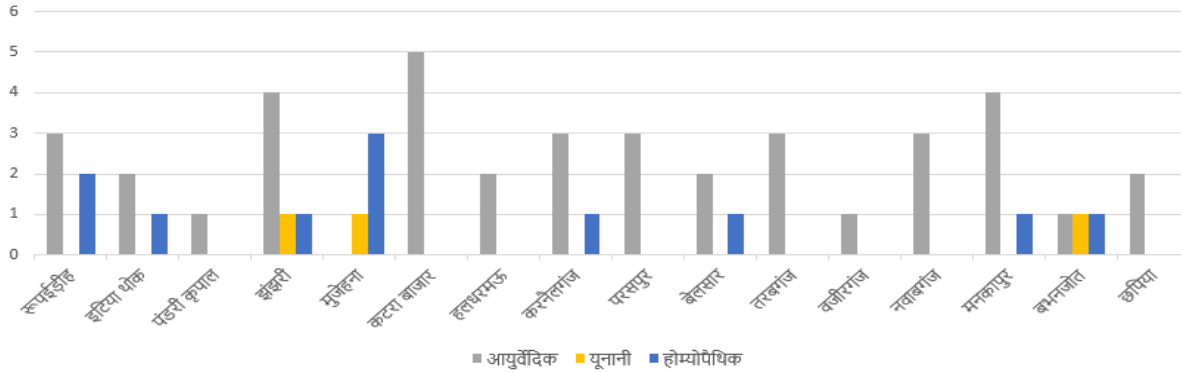
**तालिका संख्या:- 02**

जनपद गोण्डा उत्तर प्रदेश में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएं

क्रम संख्या	स्वास्थ्य सुविधाएं	चिकित्सालयों की संख्या		प्रति चिकित्सालय पर आश्रित जनसंख्या	
		2001	2011	2001	2011
1	एलोपैथिक चिकित्सालय	7	2	395083.7	1716959.5
2	प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	70	52	53184.34	66036.9
3	सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र	4	21	691396.5	163519.9
4	आयुर्वेदिक - चिकित्सालय	42	42	65847.2	81759.9
5	होम्योपैथिक - चिकित्सालय	23	13	120242.8	264147.6
6	यूनानी - चिकित्सालय	8	4	691396.5	858479.7

आंकड़ों का स्रोत:- जिला सांख्यिकी पत्रिका गोण्डा

## जनपद गोडा में विकासखण्डवार आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक चिकित्सासेवा



सबसे पहले बात करें एलोपैथिक चिकित्सालयों की, 2001 में इनकी संख्या 7 थी जो 2011 में घटकर मात्र 2 रह गई। इससे प्रति चिकित्सालय पर आश्रित जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई—लगभग चार गुना। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है क्योंकि एलोपैथिक चिकित्सा देश की सबसे व्यापक रूप से अपनाई गई चिकित्सा पद्धति है, और इसमें कमी का सीधा प्रभाव आम जन पर पड़ता है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या भी 70 से घटकर 52 हो गई। हालांकि गिरावट अधिक नहीं है, परंतु प्रति चिकित्सालय आश्रित जनसंख्या में वृद्धि हुई है, जो दर्शाता है कि इन केंद्रों पर बोझ बढ़ गया है। इसके विपरीत, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या 4 से बढ़कर 21 हो गई है। यह एक सकारात्मक परिवर्तन है। इससे प्रति केंद्र जनसंख्या का अनुपात घटा है, जो यह दर्शाता है कि इन क्षेत्रों में सरकार ने प्रयास किए हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सालयों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई—2001 में 42 और 2011 में भी 42 रहे। परंतु प्रति चिकित्सालय जनसंख्या बढ़ गई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इनकी सेवाओं की मांग बढ़ रही है जबकि आपूर्ति स्थिर है। होम्योपैथिक चिकित्सालयों की संख्या 23 से घटकर 13 रह गई, और जनसंख्या अनुपात दोगुने से अधिक हो गया। इससे होम्योपैथी सेवाओं की सुलभता में कमी आई है। यूनानी चिकित्सालयों की संख्या भी 8 से घटकर 4 हो गई, जिससे प्रति चिकित्सालय पर निर्भर जनसंख्या काफी अधिक हो गई है। जनपद गोण्डा में मुख्यतः दो प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हैं

1. सरकारी स्वास्थ्य सुविधाएं

2. निजी स्वास्थ्य सुविधाएं

### एलोपैथिक चिकित्सा:-

आधुनिक चिकित्सा के विकास के बहुत पहले से ही, एलोपैथिक प्रणाली ने हमेशा स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली के क्षेत्र पर अपना दबदबा बनाए रखा है। इस पश्चिमी चिकित्सा को मुख्य रूप से इसके चिकित्सक द्वारा किए गए दिखावे के आधार पर पहचाना जाता है। यह चिकित्सा की कई अन्य सीमांत प्रथाओं से काफी अलग है। विविधता तब शुरू होती है जब यह सवाल उठता है कि इलाज कैसे किया जाए क्योंकि इस बिंदु से एलोपैथ अपने दर्शन और प्रवृत्तियों के लिए अपने झुकाव को प्रदर्शित करता है, जिस पर इस प्रणाली के डॉक्टर बहस करना शुरू करते हैं। इसके अलावा एलोपैथिक चिकित्सा के घावों में निदान और उपचार भी अन्य चिकित्सा प्रणाली से अलग है। इसे उस अभ्यास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो उपचार के माध्यम से बीमारी का मुकाबला करता है, जो इलाज की गई बीमारी से उत्पन्न होने वाले प्रभावों से अलग प्रभाव पैदा करता है, जिसमें उन सभी उपायों का उपयोग शामिल है जो बीमारी के उपचार में कुछ मूल्य साबित हुए हैं।

## तालिका संख्या:- 02

जनपद गोण्डा उत्तर प्रदेश में उपलब्ध एलोपैथिक स्वास्थ्य सुविधाएं

क्रम संख्या	स्वास्थ्य सुविधाएं	2001	जनसंख्या स्वास्थ्य अनुपात	2011	जनसंख्या स्वास्थ्य अनुपात
1	एलोपैथिक चिकित्सालय	7	458412.8	2	1716959.5
2	प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	70	45841.2	52	66036.9
3	सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र	4	802222	21	163519.9
4	उपलब्ध सैय्याओं की संख्या	857	3744.3	1372	2502.8
5	डॉक्टरों की संख्या	102	31459.7	136	25249.4
6	पैरामेडिकल स्टाफ की संख्या	647	4959.6	881	3897.7
7	अन्य	82	39132.8	1217	2821.6

आंकड़ों का स्रोत:- जिला सांख्यिकी पत्रिका गोण्डा

स्वास्थ्य किसी भी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास का आधार होता है। यदि नागरिक स्वस्थ होंगे, तो वे उत्पादक बन सकेंगे और राष्ट्र की उन्नति में योगदान दे सकेंगे। प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि भारत में 2001 से 2011 के बीच स्वास्थ्य सुविधाओं में कई प्रकार के परिवर्तन हुए हैं—कुछ सकारात्मक, तो कुछ चिंताजनक। सबसे पहले बात करें एलोपैथिक चिकित्सालयों की, तो इनकी संख्या में अत्यधिक गिरावट आई है। 2001 में 7 अस्पताल थे, जिनका जनसंख्या स्वास्थ्य अनुपात 3,95,083.7 था, जबकि 2011 में अस्पतालों की संख्या घटकर केवल 2 रह गई और अनुपात बढ़कर 17,16,959.5 हो गया। यह गिरावट दर्शाती है कि आम जनता के लिए अस्पतालों तक पहुँच और अधिक कठिन हो गई है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या भी 70 से घटकर 52 रह गई है। इसके कारण 2011 में प्रति व्यक्ति केंद्र का अनुपात और अधिक हो गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर की चिकित्सा सेवाओं पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। हालांकि, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या में अच्छी वृद्धि हुई है—4 से बढ़कर 21 हो गए हैं, जिससे स्वास्थ्य सुविधाओं का क्षेत्रीय विस्तार हुआ है। इसी प्रकार डॉक्टरों, पैरामेडिकल स्टाफ और सैय्याओं की संख्या में भी वृद्धि हुई है, जो कि स्वास्थ्य प्रणाली के मानव संसाधन पक्ष के लिए सकारात्मक संकेत है। दिलचस्प बात यह है कि 'अन्य' श्रेणी की सेवाओं में भारी वृद्धि हुई है—82 से बढ़कर 1217 तक। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि पारंपरिक चिकित्सा, निजी क्लिनिक, मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयाँ या अन्य स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार हुआ है।

इस प्रकार, 2001 से 2011 के बीच स्वास्थ्य सुविधाओं के स्वरूप में मिश्रित परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहाँ एक ओर मानव संसाधनों में वृद्धि हुई है, वहीं दूसरी ओर बुनियादी संरचनाओं जैसे एलोपैथिक चिकित्सालय और प्राथमिक केंद्रों में कमी आई है। यह असंतुलन दर्शाता है कि स्वास्थ्य नीति में एक ओर ध्यान केंद्रित करने के बजाय समग्र विकास की आवश्यकता है।

**आयुर्वेद चिकित्सा:-**

आयुर्वेद प्रकृति के अध्ययन पर आधारित है। दैवीय उत्पत्ति की प्रणाली के दो प्रमुख स्कूल हैं। "अथर्व संप्रदाय" (चिकित्सकों का स्कूल) और धन्वंतरि शम्भुप्रदाय (सर्जन का स्कूल)। "चरक समिति" और "सुश्रुत समिति" चिकित्सा की इस सबसे पुरानी और संगठित प्रणाली का विशाल संकलन है। आठ विशेष आयुर्वेद को एक और नाम "अष्टांग आयुर्वेद" मिला। यह प्रणाली चार प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है: पंच महाभूत, त्रिदास, धाता और मल्लु। आयुर्वेद के अनुसार, स्वास्थ्य इन अवधारणाओं की एक संतुलित स्थिति है।

वर्तमान में जिले में 42 (2020-21) आयुर्वेद अस्पताल कुल 31 आयुर्वेद डॉक्टर तथा बेडों की संख्या 178 है है। यह देखा गया कि उत्तरदाताओं को आयुर्वेद दवाओं पर बहुत भरोसा है क्योंकि यह बिना किसी दुष्प्रभाव के राहत प्रदान करती है और इसलिए प्रक्रिया

धीमी है। जिन लोगों ने एलोपैथिक का सहारा लिया, उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि राहत तुरंत मिल गई। हालाँकि उन्हें लगा कि दवाएँ महंगी थीं, लेकिन उन्होंने पाया कि वे प्रभावी, निगलने में आसान और आसानी से उपलब्ध थीं।

### होम्योपैथी चिकित्सा:-

होम्योपैथी (या होम्योपैथी) वैकल्पिक चिकित्सा का 200 साल पुराना रूप है जो उपचार प्रतिक्रिया को उत्तेजित करने और शरीर की खुद को ठीक करने की क्षमता को मजबूत करने का दावा करता है। इसका अभ्यास करने वाले लोग दावा करते हैं कि यह 'समान के साथ समान' के उपचार के सिद्धांत पर आधारित चिकित्सा की एक समग्र प्रणाली है। यह विशेष रूप से तैयार, अत्यधिक पतला तैयारी का उपयोग करके रोग के लिए शरीर की स्वयं की उपचार प्रतिक्रिया को उत्तेजित करने का दावा करता है।

जबकि होम्योपैथिक दवाओं को अपने आप में हानिकारक नहीं माना जाता है, होम्योपैथी को खतरनाक माना जा सकता है यदि कोई व्यक्ति इसे चिकित्सा उपचार के रूप में मानता है और गंभीर बीमारियों या संक्रमणों से निपटने के लिए पारंपरिक चिकित्सा उपचार के विकल्प के रूप में होम्योपैथिक दवाओं का उपयोग करता है। जनपद गोण्डा में कुल **13** होम्योपैथिक चिकित्सालय, कुल **10** होम्योपैथिक डॉक्टर तथा बेडों की संख्या 00 हैं (2020-21)।

### यूनानी चिकित्सा:-

यूनानी चिकित्सा में इलाज की तुलना में बीमारी की रोकथाम और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने पर अधिक जोर दिया जाता है। यह मानव स्वास्थ्य की स्थिति पर आसपास की और पारिस्थितिक स्थितियों के प्रभाव को भी पहचानता है। अस्वास्थ्य-सिंह ज़रूरी के अंतर्गत *बका-ए-सेहत* (स्वास्थ्य का संरक्षण) को परिभाषित किया गया है। अस्वास्थ्य -*सिंह ज़रूरी* (स्वास्थ्य के छह आवश्यक कारक) प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करते हैं और सभी मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ उनके असंतुलन के कारण होती हैं। अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए इन आवश्यक कारकों को गुणवत्ता, मात्रा और क्रम के संदर्भ में संतुलित किया जाना चाहिए ताकि अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखा जा सके। इन कारकों के बीच संतुलित संबंध मूड और स्वभाव को सही रास्ते पर रखता है। चिकित्सा की इस समग्र प्रणाली में स्वास्थ्य संवर्धन का सबसे अच्छा संभव तरीका है *ताबियात* (मेडिकेट्रिक्स प्रकृति या प्रतिरक्षा) में सुधार। चिकित्सा पद्धति में रोगों के निदान के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू तीन हैं, और वे हैं *नब्ज़* (नाड़ी), *बाउल* (मूत्र) और *बरज़* (मल) की जाँच। किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य की स्थिति के लिए आस-पास का वातावरण और पारिस्थितिकीय परिस्थितियाँ बहुत हद तक जिम्मेदार होती हैं। स्वास्थ्य की रोकथाम के कारणों पर बहुत जोर दिया जाता है ( *अस्वास्थ्य सिंहा ज़रूरी* ) और *साथ ही रोगी के मिज़ाज* (स्वभाव) पर भी ध्यान दिया जाता है गोण्डा जनपद में कुल **04** यूनानी चिकित्सालय एवं **31** यूनानी डॉक्टर हैं।

### प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्सा एक वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली है जो शरीर की स्व-उपचार क्षमता पर जोर देती है और प्राकृतिक उपचारों का उपयोग करती है। यह प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धांतों और प्रथाओं का उपयोग करके स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और रोगों का उपचार करने का एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है।

### ध्यान एवं योग

योग एक प्राचीन अभ्यास है जिसमें हल्का व्यायाम, श्वास नियंत्रण और ध्यान शामिल है। नियमित योग अभ्यास के स्वास्थ्य लाभों में रक्तचाप कम होना, मुद्रा और रक्त संचार में सुधार, तथा बेहतर स्वास्थ्य की भावना शामिल हो सकती है। योग शरीर और मन को एक साथ लाता है और तीन मुख्य तत्वों - गति, श्वास और ध्यान पर आधारित है। योग से कई शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभ होते हैं जिनमें बेहतर मुद्रा, लचीलापन, शक्ति, संतुलन और शरीर की जागरूकता शामिल है। किसी भी नए फिटनेस कार्यक्रम को शुरू करने से पहले हमेशा अपने चिकित्सक से परामर्श करें, खासकर यदि आप पहले से ही किसी चिकित्सा समस्या से ग्रस्त हैं या आपने लंबे समय से व्यायाम नहीं किया है



## निष्कर्ष:

निजी चिकित्सा व्यवसायी सार्वजनिक क्षेत्र में उपचारात्मक स्वास्थ्य सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। लेकिन निजी डॉक्टरों का वितरण अत्यधिक असमान है। निजी डॉक्टर मुख्य रूप से शहर के मध्य में केंद्रित हैं। यह एक दुखद तथ्य है कि अध्ययन क्षेत्र में केवल कुछ ही चिकित्सा व्यवसायी हैं जो चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी तरह से योग्य हैं। बहुत सारे सुसज्जित नर्सिंग होम हैं जो अध्ययन क्षेत्र के लोगों को विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। कुछ निवारक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र भी ठीक से काम कर रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवा में होने वाली बुनियादी सुविधाओं में डॉक्टर, अस्पताल और इनडोर मरीजों के लिए बिस्तर शामिल हैं, जिनका अध्ययन जनसंख्या अनुपात और बिस्तर जनसंख्या अनुपात के संदर्भ में किया जाता है। इसके अलावा लोगों की आबादी के हिसाब से निजी क्लीनिक भी क्षेत्र में काम कर रहे हैं। गंभीर और जटिल मामलों में निजी डॉक्टरों द्वारा जिला अस्पताल को भी रेफर किया जाता है।

हाल के वर्षों में एलोपैथिक दवाओं की तुलना में आयुर्वेद और होम्योपैथिक दवाओं का उपयोग धीरे-धीरे बढ़ रहा है और अध्ययन क्षेत्र में इसकी उम्मीद नहीं है। एलोपैथिक उपचार उन लोगों को तत्काल राहत प्रदान करने में सहायक है जो गंभीर रूप से पीड़ित हैं। उचित निदान के अभाव में ब्रॉड स्पेक्ट्रम दवाओं की मजबूत खुराक के प्रशासन से राहत मिलती है लेकिन मूल कारण पर ध्यान नहीं दिया जाता है और साइड-इफेक्ट से शरीर के अन्य कार्य भी बाधित होते हैं। आयुर्वेद और होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में हालांकि प्रभाव धीमा है, वे कारणों का इलाज करते हैं, और कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है। बढ़ती जरूरतों को देखते हुए मेडिकल स्टोर्स में होम्योपैथिक और आयुर्वेद दवाओं की उपलब्धता भी धीरे-धीरे बढ़ रही है क्योंकि कई मामलों में एलोपैथिक डॉक्टर भी इन दवाओं का वर्णन करते हैं।

## संदर्भ :-

- Shanghai Prof. G.C . : Medical Geography (Text Book)
- Singh Prof. Savindra : Environmental Geography (Text Book)
- Chauhan Dr. Dharmendra Singh : Medical and Health Geography (Text Book)
- www.gonda.nic.in
- Vishwakarma Dr. Rekha, Health care delivery in Sagar city uttar Bharat bhugol patrika volume 44
- www.spider.com,
- www.upecp.in
- www.greentribunal.gov.in
- Chaubey, Kailash (2010): Conceptual Scenario of Health Care Pluralism in India, Eastern Geographer, Vol, XVI, No-1, Page No. 85,88
- Chaubey, Kailash (1986): Health Services in M.P. Geographical Review of India. Calcutta, Vol48, No.2, Page No. 49-57
- Gray, W.S. (1974): Health Care Delivery Special prospective, Mc Graw-Hill New York.
- Vishwakarma, Rekha (1996): Geographical Study of Diet & Health in Sagar City, Ph.D. Thesis Dr. Hari Singh Gour University, Sagar, M.P.
- Ashford, J.P. & Bunt, R.G.: "The Distribution of Doctor Patient Contacts in the National Health Services, Journal of the Royal Statistical Society, Vol, 137, Page No. 347-352